Research Inspiration
ISSN: 2455-443X
Journal home page: www.researchinspiration.com
Vol. 08, Issue-I, Dec. 2022

महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में दर्शनीय चेतना

(Visible Consciousness in the Epics of Mahakavi Kalidas)

Shashi Rajpoot[a,*] **Dr. S. S. Gautam**[b,**]

[a] *Ph.D. Scholar (Sanskrit), Govt. P.G. College, Datia, Jiwaji University Gwalior, Madhya Pradesh,(India).*
[b] *Professor, Govt Chhatrasal College, Pichhore, Jiwaji University Gwalior, Madhya Pradesh,(India).*

KEYWORDS

प्रेम और सौन्दर्य दर्शन, प्रकृति दर्शन, पुरुषार्थ दर्शन, महाकवि कालिदास,

ABSTRACT

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के महानतम् कवियों में से एक थे। उनकी रचनाओं की तुलना विश्व की श्रेष्ठ रचनाओं में की जाती हैं। हमें कालिदास की रचनाओं में जीवन की समस्त समस्याओं का वर्णन किया गया हैं। उनकी रचनाएँ मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालती हैं। कालिदास की रचनाओं में हमें प्रत्येक दर्शन का चित्रण मिलता है। कालिदास ने अपने महाकाव्यों में समाज दर्शन का चित्रण करते हुए समाज में व्याप्त सभी प्रथाओं का चित्रण किया हैं। इसके माध्यम् से हमें सामाजिक संबंधों के परम मुल्यों का पता चलता हैं। धर्म दर्शन के माध्यम से कवि ने समाज में धर्म के महत्व का पता चलता हैं। प्रेम और सौन्दर्य दर्शन के द्वारा कवि ने प्रेम और प्रेम सौन्द्रीय का बडा कि रोचक वर्णन किया हैं। नारी दर्शन के द्वारा कवि ने नारी की पवित्रता और समाज में उसके महत्व को दर्शाया गया हैं। पुरुषार्थ दर्शन के द्वारा कालिदास ने पुरुषार्थ करने पर जोर दिया हैं। प्रकृति दर्शन के माध्यम् से कवि ने प्रकृति की मानव जीवन में उपयोगिता को बजाया हैं। इस प्रकार हम देखते है कि महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्यों में मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सभी दर्शनों का वर्णन किया हैं।

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास वस्तुतः संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र है उनकी कृतियों में असाधारण कवित्व शक्ति 'दर्शन' की तत्वदृष्टि से भी परिपूर्ण है। निवृतिपरक ज्ञानमार्ग और कर्मपरक ज्ञानमार्ग के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप का प्रतिपादन उनके साहित्य के विवेचन से दृष्टिगोचर होता है। प्राकृतिक शक्तियों का समष्टिगत भाव भारतीय दर्शन की विशेषता है।

दर्शन भारतीय साहित्य में प्रधान तत्व रहा है संस्कृत साहित्य में प्रत्येक कवि ने अपनी रचनाओं में दर्शन का चित्रण किया है। उन कवियों में कालिदास भी एक ऐसे कवि रहे हैं जो अपनी रचनाओं में दर्शन का मार्मिक चित्रण करते है। इसके बाद कालिदास विश्व के महान कवियों में गौरव में स्थान रखते हैं। महाकवि कालिदास सात ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें तीन नाटक, दो महाकाव्य दो महाकाव्य तथा दो खण्डकाव्यों की रचना की है।

कालिदास ने नयनाभिराम भारत भूमिका दिव्य दर्शन कर इसके भौतिक भव्य अंगों का सचेतन रूप में चित्रण कर उनमें दार्शनिक स्वरूप को भी उद्‌बुद्ध कर प्राकृतिक रूपों के माध्यम से मनोहारिणी झांकी प्रस्तुत की है, जो धर्म, दर्शन, राजनीति शिक्षा आदि की केन्द्र विन्दु होकर देश–विदेश में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है, जोकि विशेष गणेशवीय रूप के साथ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। महाकवि कालिदास की कृतियों में वर्णित, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, चेतना व दार्शनिक स्वरूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तो हैं ही साथ ही वर्तमान स्थितियो मे उपादेय भी।

कालिदास के खण्डकाव्यों तथा नाटको के साथ–साथ महाकाव्यों में भी हमें दर्शन का भी वर्णन मिलता है।

* **Corresponding author**
***E-mail:** shashirajpootji00@gmail.com (Shashi Rajpoot). https://orcid.org/0000-0003-1792-3410
****E-mail:** ssgautam1967@gmail.com (Dr. S. S. Gautam). https://orcid.org/0000-0003-0148-3692

DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v8n1.05
Received 10th Nov. 2022; Accepted 20th Dec. 2022
Available online 30th Dec. 2022

2455-443X /©2022 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

समाज दर्शन

समाज दर्शन से हमारा तात्पर्य सामान्य समाज से है क्योंकि सामान्य समाज दार्शनिक दृष्टिकोण सार्वभौमिकता की ओर संकेत करता है। इस प्रकार समाज दर्शन का विषय समस्त मानव समाज है । समाज दर्शन का में समाजिक सम्बन्धों, मानसिक अथवा चैत्य तत्व होता है, इसके दो पहलू होते है रचनात्मकता और आलोचनात्मक रचनात्मक पहलू में यह सामाजिक सम्बन्धों के परम मूल्यों का पता लगाता है। अपने दूसरे पहलू में समाज दर्शन सामाजिक विज्ञानों की विधियों, प्रत्ययो वर्गों और मौलिक सिद्धान्तों की आलोचना करता है तथा उनकी व्याख्या उपस्थित करता है।[1]

कालिदास के कुमारसम्भव में हमे सामाजिक दर्शन का चित्रण मिलता है। कुमारसम्भव के अष्टम् सर्ग में सम्भोग लीला के माध्यम से गर्भाधान संस्कार का चित्रण किया गया है। जोकि सामाजिक जीवन का एक प्रमुख अंग है, 'गर्भ' के धारण की इस प्रक्रिया को दृष्टि में रखते हुये नही भूलना चाहिए कि गर्भधारण की प्रथम जन्म माना जाता है। यथा

पुरुष ह वा अयमादितो गर्भो भवति ।
यदेतद्वेतः तदेतदेतः तदेतत्सर्वेभ्योऽगे भ्यस्तेजः
समभूतमात्मन्येवात्मानां विभति ।
तद्यदा स्त्रियां सिंचत्य थैनज्जनयति तदस्य प्रथमं जन्मा।।[2]

इस सर्ग के माध्यम से महाकवि कालिदास ने सामाजिक जीवन का उल्लेख किया है। सामाजिक दर्शन के अन्तर्गत कालिदास ने अपनी रचनाओं में सामाजिक संरचनाओ का उल्लेख किया है। समाज में परिवार के महत्त्व को दर्शाते हुए कालिदास ने रघुवंश के माध्यम से भगवान श्री राम के परिवार का चित्रण किया है।

श्रीराम जब माता कौशल्या के गर्भ से धराधाम अवतीर्ण हुए तब उनके शरीर की अभिरामता देखकर पिता, दशरथ ने उसका नाम 'राम' रख दिया । आगे चलकर वही श्रीराम लोकाभिराम बन गये। रघुवंश में वर्णित राम बड़े तेजोदीप्त हैं । धर्नुयज्ञ के समय गुरू विश्वामित्र कीं आज्ञा से जब वे धनुष तोड़ने को उठ खड़े हुए तब राजा जनक काकपक्षधारी किशोरवय उनके पौरुष के प्रति श्रद्धानत हो उठे । आग चाहे इन्द्रगोप (बीरबहूटी) नामक कीड़े के ही बराबर क्यों न हो पर उसकी दाह शक्ति में कमी नहीं होती –

एवमाप्तवचनात् सपौरूषं काकपक्षकधरेऽपि राघवे।
श्रद्दधे त्रिदशगोपमात्र के दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि।[3]

धर्मदर्शन

महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में हमे धर्म दर्शन का चित्रण मिलता है। रघुवंश वर्णित राम कथा की अद्वितीय व्यापकता धार्मिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में प्रमाणित होती है। डॉ. श्री रंजनसूरिदेवजी के अनुसार रघुवंश में वर्णित रामावतार देवों की आर्ति का नाश करने के लिये ही हुआ था। इस महाकाव्य के प्रायः दसवें सर्ग से पन्द्रहवे सर्ग तक भगवान श्रीरामजी का दिव्य चरित्र वर्णित है। जैसे

अथात्मनः शब्दगुणं गुणज्ञः पदं विमानेन विगाहमानः।
रत्नाकरं वीक्ष्यमिथा सजायां रामाभिधानो हरिरित्य वाच।।[4]

इस श्लोक से स्पष्ट है कि 'हरि' या विष्णु और राम दोनों में कोई अंतर नहीं है। राम गुणज्ञ हैं, अर्थात् रत्नाकर समुद्र के ऐश्यर्य गुण के ज्ञाता है। वह विमान द्वारा अपने ही स्थान अर्थात् शब्द गुणात्मक आकाशरूप विष्णु पद का संचरण कर रहे हैं।

महाकवि की दृष्टि में श्रीराम अद्वैत वेदान्त के निर्गुण वृद्ध और सगुण ईश्वर के समवेत रूप हैं। अद्वैत दर्शन के ब्रह्म स्वयं प्रकाश, क्रूरस्थ नित्यनिष्क्रय, नित्यतृप्त, सच्चिदानन्द, निरवयव, निराकार और निर्गुण है। वही माया से आच्छादित होने पर सगुण रूपधारी जगत्सृष्टा के सम्मिलित रूप श्री रामनाम धारी हरि का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है –

नमो विश्वसृजे पूर्व विश्वं तद्नु विभ्रते ।
अथ विश्वस्य संहर्त्रे तुभ्यं त्रेधा स्थितात्मने ।
अमेयो मितलोक स्त्वमनर्थी प्रार्थनावहः ।
अजितो जिष्णुरत्यन्तमवाक्तो व्यक्तकारणम्।।[5]

अर्थात– विश्व के सर्जक, पालक और संहारक – इस त्रिधास्वरूप में स्थित आपको नमस्कार है आप अपरिमेय होकर भी लोक – परिमेय हैं, निःस्पृह होकर भी कामप्रद हैं जयशील है और अत्यन्त सूक्ष्म होकर भी व्यक्त स्थूल रूप के कारण हैं आप सर्वान्तर्यामी हैं निष्काम और प्रशस्त तप से दीप्त है, दयालु और नित्यान्दस्वरूप है अनादि और अक्षर हैं।

कालिदास जी पक्के अद्वैतवादी थे । शास्त्र तथा आगमो ने सिद्धि के भिन्न–भिन्न मार्ग बतलाये हैं, परन्तु इन मार्गो का चरम लक्ष्य भगवान ही हैं। जिस प्रकार गंगाजी के प्रवाह भिन्न–भिन्न मार्गों से प्रवाहित होते हैं परन्तु अन्तिम स्थान समुद्र ही मे वे गिरते हैं तथा अपना जीवन सफल बनाते हैं

बहुधाडप्यागमैर्भिन्नाः पन्थानः सिद्धिहेतवः।
त्वय्येव निपतन्त्योधा जाहनवीया इवार्णवे ।।[6]

भारतीय धर्म तथा दर्शन का अन्तिम लक्ष्य है भिन्नता में अभिन्नता की अनुभूति, नाना में एकता का साक्षात्कार है। कालिदास ने अपने श्लोक में इसी उदात्त को स्थान दिया है। इस श्लोक के भाव को जितना ही कार्य में परिणित किया जायेगा उतना ही मंगल होना और पारस्परिक बोध तथा संघर्ष का अन्त होगा। समाज की सुव्यवस्था होने पर व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है।

प्रेम और सौन्दर्य दर्शन

सामाजिक जीवन में प्रेम और सौन्दर्य की अपनी पार्दिर्शिता होती है। जिसे महाकवि कालिदास ने बड़े ही मार्मिक रूप से प्रदर्शित किया है। कालिदास को समीक्षकों द्वारा प्रेम और सौन्दर्य का कवि कहा जाता है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में शाकुन्तला प्रेम और आदर्श का सौन्दर्य का आदर्श प्रस्तुत करती है कालिदास श्रृंगार तथा प्रेम के भावुक कवि है अतः उनकी दृष्टि सौन्दर्य की कोमल भावना को पहचानने तथा प्रकट करने में नितान्त चतुर है उनका रम्य हृदय उन सौन्दर्य वर्णनों में झाँकता हुआ दिखाई पड़ता हैं। वे ब्राह्म प्रकृति और अन्तः प्रकृति के पूरे सामरस्य के उपासक हैं। ब्राह्म प्रकृति जो अभिरामता प्रस्तुत करती है वहीं अभिरामता अन्तः प्रकृति में विद्यमान है।[7]

शोभा ओर सौन्दर्य के वर्णन में नवयौवन के इस विभेद या उभार को कालिदास ने यमक अलंकार में लक्षित करके सहृदय– हृदय गोचर बनाया है। इसलिए यह उभरे हुए वक्षः स्थलों पर झूलते हुए हार चाहे वे शरत्कालीन चन्द्रमा की मरीचियों के समान कोमल मृणाल– नाल के बने हों या मुक्ताजाल ग्रथित हेमसूत्र से गढ़ गए श्रोणीबिम्ब को मण्डित करने वाली कनक – कौंची या हेममेखला, हंसरूपानुकारी, नुपुर, स्तनांशुक, अनंग– विलास मंदिरालसनन आदि का जमकर वर्णन करते हैं। कंकण वलय या मृणालवलय उन्हें पसन्द है । क्योंकि सुवृत कलाइयाँ की शोभा को निखार देते हैं लाक्षारस और लहर की किनारी भी उन्हें रूचिकर है। ताम्बूल राग, सिन्दूर, राग, गोरोचन, तिलक धाम्मिलपाष किनारी भी उन्हें रूचिकर है। ताम्बूल राग, सिन्दूर राग, गोरोचन, तिलक, धाम्मिलपाष इत्यादि इसलिए वर्णनीय है कि वे चतुरस्त्रशरीर से उभार को अधिक दिखा देते हैं।

नारी दर्शन

महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्यो में नारी दर्शन को प्रमुख्यता से उजागर किया है। कालिदास जी अपनी कृ तियों में नारी की पवित्रता को दर्शाते हुए सीता माँ का वर्णन करते है। संसार की पतिव्रता स्त्रियों में पति–परायणा सीता का स्थान बहुत ऊँचा है समस्त स्त्री चरित्रों में सीताजी का चरित्र सर्वोत्तम, सर्वथा आदर्श और अनुकरण करने योग्य है – हिन्दू समाज की सभी स्त्रियों के लिये प्रत्येक परिस्थिति में सीताजी का जीवन पंथ प्रदर्शक की तरह असाधारण, पातिव्रत्य, त्याग, शील, निर्भयता, शान्ति, क्षमा, सौहार्द, सहनशीलता, धर्म परायणता से समन्वित है। संयम, सेवा, सदाचार, व्यवहार–पटुता, साहस, शौर्य आदि गुण एक साथ संसार की दूसरी किसी भी स्त्री में शायद ही मिल सके। श्रीसीताजी के सदृश पवित्र जीवन और अनुपम पति भक्ति का उदाहरण जगत् के इतिहास में मिलना कठिन है आरम्भ से लेकर अन्त तक सीताजी की सभी बातें पवित्र और आदर्श है।[8]

कुमारसम्भव में भी महाकवि कालिदास द्वारा माता पार्वती के माध्यम से नारी दर्शन को दर्शाया है। माता पार्वती के जन्म, बाल्याकाल, यौवनप्राति व विलक्षण सौन्दर्य का परिचय देते हुए नारद की भविष्यवाणी का उल्लेख किया गया है जिसके अनुसार पार्वती का विवाह शिव के साथ ही होगा। इस भविष्यवाणी में विश्वास कर पिता हिमालय की पुत्री को कैलाश पर्वत पर तपस्यारत भगवान शिव की सेवा के लिये भेज देता है।

कुमारसम्भव में माता पार्वती के रूप में नारी के स्वरूप का वर्णन किया गया है। माता पार्वती के द्वारा कार्तिकेय के प्रति उसके स्नेह तथा भागवन शिव के प्रति प्रेम को दर्शाते हुए नारी के सहज प्रेम तथा ममत्व की भावना वर्णित किया गया हैं। कुमारसम्भव में माता पार्वती तथा भगवान शिव के विवाह का रोचक वर्णन किया गया हैं। हिमालय ने सभी कुटुम्बियों को बुलाकर शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को अपनी पुत्री के विवाह का आयोजन किया। पार्वती को वधू के वेश में सजाया गया। सभी प्रकार की मांगलिक सामग्रियों से पार्वती को अलंकृत किया गया वधू वेश में पार्वती की सुन्दरता अवर्णनीय थी। इस प्रकार कुमारसम्भव में नारी जीवन की सुलभ क्रीड़ाओं का यथा उचित वर्णन किया गया है।

पुरुषार्थ दर्शन

महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में पुरुषार्थ पर विस्तार से प्रकाश डाला है अर्थपुरुषार्थ– पुरुषार्थचतुष्टय में अर्थपुरुषार्थ का द्वितीय स्थान है। यहाँ अर्थ का तात्पर्य संकुचित रूप में ध्यान से तथा व्यापक रूप में उन समस्त आवश्यकताओं एवं साधनों से हैं, जिनके माध्यम से इहलौकिक एवं पारलौकिक अभ्युदय की प्राप्ति होती है। इसी कारण महाभारत में इसे परमधर्म कहा गया है, जिस

पर समस्त वस्तुएँ आश्रित है। उनके अनुसार भूमि, हिरण्य (सोमा), पशु, धन–धान्य, भाण्डोपस्कर इत्यादि के साथ–साथ विधोपार्जन, मित्र– लाभ आदि को भी अर्थ माना है। ऋग्वैदिक युगीन आर्य भी भौतिक सुखों के प्रति जागरूक रहकर धन– सम्पत्ति, गौ– अश्व इत्यादि की वृद्धि हेतु भगवान से प्रार्थना करते थे। इसी प्रकार आचार्य मनु, वृहस्पति, याज्ञवल्क्य, नारद, कौटिल्य इत्यादि आचार्यो ने भी धर्मशास्त्र के व्यवहार में अर्थजगत की प्रतिष्ठा की है।

महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव महाकाव्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्ट्य रूप को सूक्ष्म रूप से अभिव्यक्त किया है। ये सोदाहरण प्रस्तुत है– शिव का कथन है।

हे सुन्दरी ! धर्म, अर्थ और काम– इन तीनों पुरुषार्थ में से आज केवल धर्म ही मुझे सबसे अधिक श्रेष्ठ प्रतीत होने लगा है, क्योंकि तुम्हारी जैसी तपस्विनी भी (पितृगृह में ही सुलभ) अर्थ और काम से मनको हटाकर केवल धर्म को ही साधना में लगी हुई है।

अनेक धर्मः सविशेषमद्य में त्रिवर्गसारः प्रतिभाति भाविनि ।
त्वया मनोनिर्विषयार्थकामया यदेक एवं प्रतिगृह सेव्यते।।[9]

योगी– लोग अपने शरीर के भीतर विद्यमान उन्हीं भगवान शंकर की खोज करते रहते हैं तथा विद्वान् लोग उनके स्वरूप को जन्म– मरणादि बंजनों से मुक्त करके मोक्ष देने वाला बताते है।

योगिनों यं विचिन्वन्ति क्षेत्राभ्यन्तरवर्तिनम् आपकी सम्पत्ति के बिना ही कौन पुरुष सांसारिक जन्म–मरण के दुःख से भयभीत होकर मोक्षमार्ग की ओर चल पड़ा है, आप कह दे तो मैं उसे सर्वागसुन्दरियों के कटाक्षविलासों में इस प्रकार जकड़ दूँ। कि वह चिरकाल तक उसी बंधन में पड़ा रहे।

प्रकृति दर्शन

महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में हमें प्रकृति दर्शन का भी चित्रण मिलता है। सांख्यदर्शन के मूलतत्व प्रकृति और पुरुष सृष्टि के सहज धर्म है। कुमारसम्भव में पार्वती और शिव को इसी दृष्टिकोण के दर्शन में समझना होगा ।

सत्व, रज और तमस इन्हीं तीन गुणों से प्रकृति बनी है। जब तक ये तीनों गुण साम्यावस्था में रहते हैं तो यह प्रकृति कहलाते हैं। सांख्य में इन्हीं तीन गुणों की बड़ी चर्चा हुई हैं– अतः प्रकृति त्रिगुणात्मक कहलाती है। रस्सी के तीन रेशों की तरह ये प्रकृति में समाविष्ट हैं। पुरुष के लिए यही बन्धन बनते हैं। ये ही सुख–दुःख, राग–द्वेष, मोह– क्लेश आदि के कारण है। ये तीनों तत्व सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण कहलाते है और ये ही प्रकृति के मूल तत्व है। इन्हीं से संसार के सारे विषय बनते हैं।[10]

आचार दर्शन

महाकवि कालिदास के महाकाव्य रघुवंश में आचार दर्शन का वर्णन किया गया है रघुवंश में आचार दर्शन का वर्णन करते हुए लिखा है, जब कौषल नरेश ने अपनी प्रिया के लिए इस प्रकार शोक कर रहे थे उस समय उन्हें देखकर वृक्ष भी मानों अपनी शाखाओ से रस बहाकर आँसू बहाने लगे । कुटुम्बियों ने अज के गोद से इन्दुमती को हटाया और पुष्प माला से सजाकर ज्यों ही चन्दन की लकड़ियों से उसका दाह संस्कार किया त्यों ही अज पत्नी के वियोग में व्याकुल हो उठे। शास्त्रविधि के अनुसार दश दिन कृत्य सम्पन्न कर जब वे नगर में घुसे तब उन्हें देखकर नगर भर के लोग फूट–फूट कर रोने लगे उन दिनों महर्षि वशिष्ठ अपने आश्रम पर ही एक यक्ष में संलग्न थे, योग बल से राजा के शोक का कारण जानकर एक शिष्य से सन्देश भेजा। एक बार तृणबिन्दु नामक ऋषि तप कर रहे थे। उनकी तपस्या से डरकर इन्द्र ने उनका तप भंग करने के लिए हिरणी नाम की अप्सरा भेजी। जैसा गंगा की लहर तट को गिरा देती है वैसे ही ऋषि को तप से डिगाने के लिए वह अप्सरा वहाँ आ पहुँची। उसे देखते ही मुनि ने क्रोधित होकर शाप दिया कि जा तू संसार में मनुष्य की स्त्री हो जा। वह शाप सुनते ही घबड़ाकर मुनि से हाथ जोड़कर गिड़ गिड़ाते हुई बोली– भगवन । मैंने दूसरों के कहने से यह काम किया है। इसमें मेरा दोष नहीं हैं, मुझे क्षमा कीजिए। यह सुनकर ऋषि ने कहा जब तक तुम्हें स्वर्गीय पुष्प नहीं दिखाई पड़ेगा तब तक तुम्हें भूतल पर रहना पड़ेगा। वही अप्सरा विदर्भ वंश में जन्म लेकर तुम्हारी रानी थी अब स्वर्गीय पुष्प देखकर वहा शाप से मुक्त होकर स्वर्ग चली गई। अतः आप उसकी मृत्यु का शोक न करें। अब शोक छोड़कर पृथ्वी का पालन कीजिए। राजाओं की सच्ची पत्नी तो पृथ्वी ही है। तुम्हारे मरने पर भी वह अब न मिलेगी, क्योंकि मरने पर प्राणी अपने अपने कर्म के अनुसार अलग–अलग मार्ग से जाते है। शास्त्र कहते हैं कि जब कुटुम्बी अधिक रोते हैं तब प्रेतात्मा को बड़ा कष्ट होता है। जब शरीर ओर आत्मा का बिछोह हो जाता है तब पुत्र स्त्री आदि की क्या बात है। आप जितेन्द्रियों में श्रेष्ठ है अतः शोक मत कीजिए। इस प्रकार से आठ वर्ष किसी तरह बिताकर अपने सुशिक्षित. कुमार दशरथ को शास्त्र के अनुसार प्रजापालन का उपदेश देकर भगवद्भजन करते हुए गंगा – सरयू

संगम पर अपना अज शरीर त्यागकर स्वर्ग के नन्दन वन में चले गये। (रघुवंश के आठवें सर्ग का इन्दुमती के मरने पर राजा अज का विलाप तथा कुमार संभव के चतुर्थ सर्ग में शंकर जी के क्रोधाग्नि से भस्म हुए कामदेव को देखकर रति का विलाप संस्कृत काव्यों में करुण रस का हृदय विदारक दृश्य है।[11]

समय से अपनी इन्द्रियों को जीत लेने वाले योगियों में तथा प्रजापालक राजाओं में सर्वश्रेष्ठ राजा दशरथ ने अपने पिता के पश्चात् उत्तर कौशल का राज्य बड़ी योग्यता से संभाला। वे कार्तिकेय के समान बलवान् और समुद्र के समान गम्भीर थे। विद्वानों का कहना है कि इस विश्व में दो ही व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंनें कर्तव्य पालन करने वाले लोगों को समुचित फल दिया– एक मनुवंशी राजा दशरथ और दूसरा देवराज इन्द्र ! दशरथ देवताओं के समान तेजस्वी और सागर के समान शान्त एवं धैर्यवान् थे। वे सबको समान समझते थे और सबसे एक–सा व्यवहार करते थे। वे कुबेर के समान प्रजाओं में धन बरसाते थे। हँसी में भी उन्होंने झूठ नहीं बोला। वे धनुष लेकर और अकेले रथ पर बैठकर समुद्र तक फैली हुई पृथ्वी का शासन करते थे । बादल के समान गरजता हुआ समुद्र उनका जय–जयकार करता था।

जैसे इन्द्र ने अपने वज्र से पर्वतों के पंख काट दिये थे वैसे ही दषरथ ने अपने बाणों से शत्रुओं का सफाया कर दिया. था। उनकी अयोध्या नगरी कुबेर की अलका से कम न थी। चक्रवर्ती राजा होने पर भी उनमें आलस्य नहीं था। जैसे पर्वतों से निकलने वाली नदियाँ समुद्र को पा लेती हैं वैसे ही कौशल, मगध तथा कैकयी देश के राजाओं की कौशल्या, सुमित्रा तथा कैकयी नामक कन्याओं ने राजा दशरथ को पति के रूप में प्राप्त किया। दशरथ अपनी तीनों रानियों के साथ ऐसा जान पड़ते थे मानों पृथ्वी पर राज्य करने के निमित्त स्वयं इन्द्र ही प्रभाव, उत्साह एवं यंत्र नाम की अपनी तीन शक्तियों के साथ अवतार लेकर चले आये हैं।[12]

उपसंहार

अन्त में निष्कर्ष के रूप मे हम कह सकते है कि महाकवि कालिदास विश्व के महानतम कवियों में से एक थे, उनकी कृतियाँ विश्व की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में अपना विशेष स्थान रखती है। महाकवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में मानव जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक दर्शन का वर्णन किया है। प्रकृति दर्शन का वर्णन करते हुए कालिदास ने प्रकृति में विद्यमान प्रत्येक तत्व का विश्लेषण किया है। पुरुषार्थ दर्शन का वर्णन करते हुए कालिदास ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थ का वर्णन किया है। नारी दर्शन के माध्यम से कालिदासजी ने समाज में नारी के महत्त्व को उजागर किया है। समाज दर्शन के द्वारा कालिदास जी ने समाज के विभिन्न स्तम्भों का विश्लेषण किया है। ठीक इसी प्रकार धर्मदर्शन के माध्यम से कालिदास जी ने मनुष्य के जीवन में धर्म के महत्त्व को बताया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि कालिदास जी ने अपने महाकाव्यों के माध्यम से जीवन के प्रत्येक दर्शन को छूने का प्रयास किया है।

संदर्भसूची –

1. डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवालः कला और संस्कृतिः काशी विद्यापीठ, वाराणसी 1982।
2. डॉ॰ टीका, प्रद्युम्न पाण्डेयः कुमारसंभव (आधारग्रन्थ) कालिदासः चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी सन् 1963।
3. डॉ॰ सुरेन्द्र देव शास्त्रीः कुमारसंभव (आधारग्रथ) कालिदासः साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार मेरठ, सन् 2000।
4. डॉ. सं. बाबूराम त्रिपाठीः मेघदूत (आधारग्रन्थ): महालक्ष्मी प्रकाशन आगरा नवीनतम संस्करण।
5. डॉ. रमाशंकर त्रिपाठीः मेघदूत (आधारग्रन्थ) टीका,: विश्व विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, तृतीय संस्करण सन् 2003।
6. रघुवंश (आधारग्रन्थ): कालिदास टीका जयकृष्णदास हरिहर गुप्त चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी–1967।
7. डॉ॰ श्रीकृष्ण मणि त्रिपाठीः रघुवंश (आधारग्रन्थ) कालिदास–टीकाः प्रकाशक चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन–संस्करण 2011।
8. धर्मपाल मैकीः मानवमूल्यपरक शब्दावली का विश्वकोष (खण्ड–4), स्वरूप एण्ड सन्स, दिल्ली संस्करण 2005।
9. चन्द्रबली पाण्डेयः कालिदासः मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1954।
10. केशव मिश्रः तर्कभाषाः व्याख्याकार तारिणीश झा, रामनारायण बेनीसाधन इलाहाबाद 1976।
11. डॉ॰ रामनारायण व्यासः धर्मदर्शनः म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल 1971।
12. पं॰ लक्ष्मीधर वाजपेयीः धर्मशिक्षाः दारागंज प्रयाग सन् 1960।

****